बच्चों की भाषा के सम्मान के मायने : एक अनुभव

द्रोण साहू

कक्षा पहली के बच्चे के साथ हुआ अपना एक अनुभव रखते हुए लेखक बताते हैं कि बच्चों की भाषा का सम्मान करने के असल मायने क्या हैं? यह बड़ा सवाल भी वे उठाते हैं कि सामाजिक-सांस्कृतिक विकास और कक्षा में सीखना-सिखाना, इन दोनों के अन्तर्सम्बन्ध को कैसे देखा जाए? सं.

हम अकसर यह बात करते रहते हैं कि बच्चों की भाषा का कक्षा में प्रयोग किया जाना चाहिए या उनकी भाषा को कक्षा में सम्मान के साथ स्थान दिया जाना चाहिए। हम अकसर इन वाक्यों का प्रयोग भी करते हैं। और यह मानकर चलते हैं कि हम इनके अर्थ अच्छे से समझते हैं। लेकिन कक्षा, स्कूल, यहाँ तक कि अन्य जगहों व अवसरों पर किए गए अपने क्रियाकलापों पर हम गहरी नज़र डालें तो पाते हैं कि अकसर हमारी यह समझ अधूरी होती है। हम इन वाक्यों को सुनकर सराहते हैं लेकिन न तो पूरी तरह से इन्हें समझते हैं और न ही इनके निहितार्थों को समझ पाते हैं। कि ऐसा क्यों कहा जाता है? इसकी क्या ज़रूरत है? और एक स्कूल, कक्षा व इसकी प्रक्रियाओं से यह कैसे जुड़ता है? ऐसा ही शायद मेरे साथ भी था। कक्षा में हुए एक वाक़ये ने मुझे यह समझने में मदद की कि बच्चों की भाषा को सम्मान देने के असल मायने क्या हैं? बच्चों को समझने के मायने क्या हैं और कुछ सिखाने के भी। वह कहते हैं न कि, 'जाके पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई'।

इस संक्षिप्त लेख के ज़रिए मैं इस वाक़ये का अनुभव आपके साथ साझा कर रहा हूँ। यह बात 2019 की है। उस सत्र में मेरी पहली कक्षा में पृथ्वी नाम का एक बच्चा आया था। वह कक्षा में अकसर चुपचाप रहा करता था। किसी बात पर बार-बार बोलने के लिए प्रेरित करने पर भी केवल 'हाँ' या 'ना' में जवाब दे देता या फिर सिर हिलाकर 'हाँ' या 'ना' का इशारा भर कर देता था। हाँ, केवल हाज़िरी लेते वक़्त वह बड़े ज़ोर से चहक कर 'यस सर' ज़रूर बोलता था। जब मैं अन्य बच्चों से पृथ्वी की चुप्पी बारे में पूछता तो वे बोलते, "सर, ओहर तो हमर करा मस्त गोठियाथे अउ अब्बड़ आने-आने गाली घलो बकथे।" इसका हिन्दी में अर्थ है– सर, वह तो हमारे साथ बहुत अच्छे से बात करता है और अलग-अलग गालियाँ भी देता है।

कक्षा में मैंने एक परिपाटी विकसित की है कि जो बच्चा किसी दिन स्कूल नहीं आएगा वह अगले दिन हाज़िरी के वक़्त सामने आकर पिछले दिन न आने का कारण हिन्दी में बताएगा। इसके पीछे मेरा तर्क यह था कि मैं इसके माध्यम से

बच्चों को हिन्दी बोलने के अधिक-से-अधिक अवसर दे रहा हूँ, जिससे वे हिन्दी बोलना जल्दी-से-जल्दी सीख लेंगे।

एक दिन पृथ्वी स्कूल नहीं आया था। उसके अगले दिन वह हाज़िरी के वक़्त मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। मैंने उससे सवाल किया (जैसा कि मैं अन्य बच्चों से भी करता हूँ), "पृथ्वी, कल तुम पढ़ने क्यों नहीं आए थे?" वह कुछ देर चुप रहा, फिर बड़ी मुश्किल से उसने कुछ कहने की कोशिश की, "मोमा... गाँव... नहीं... मामा... घग्घर।" "तुम मामा के घर क्यों गए थे?" मैंने तुरन्त दूसरा सवाल दाग़ दिया। पर इस बार उसने कुछ बोलने की कोशिश भी नहीं की। इसके बाद मैंने उसके साथ-साथ पूरी कक्षा को मामा के घर जाने से लेकर स्कूल आने तक की सारी गतिविधियों पर 10 से 15 मिनट का एक लेक्चर तक हिन्दी में दे डाला। जब मेरा लेक्चर ख़त्म हुआ तो पृथ्वी की चुप्पी हिचकियों में बदल गई। मैं कुछ समझ पाता उससे पहले एक बच्चे ने (जिसे थोड़ी-थोड़ी हिन्दी आती थी) मुझसे कहा, "सर, इसके मम्मी-पापा और इसके घरवाले ट्रैक्टर में उसके मामा घर काम भात (मृत्युभोज) खाने जा रहे थे। ये 'नहीं जाऊँगा' बोल रहा था तो इसको पीटते-पीटते बरकसी (जबरन) बिठाकर ले गए।" मैं थोड़ी देर सन्न खड़ा रह गया। मुझे महसूस हुआ कि यदि मैं इस बच्चे से शुरू से ही उसकी मातृभाषा, छत्तीसगढ़ी में बात कर रहा होता तो वह आज अपनी परेशानी या मन की बात स्पष्ट रूप से बता सकता था। उसी समय मेरे दिमाग़ में यह बात भी कौंध गई कि किस कारण से वह मेरी कक्षा में चुप बैठता था, जबकि वह अपने दोस्तों के साथ ख़ूब बातें करता था। इस घटना ने मुझे यह भी सोचने पर मजबूर कर दिया कि बच्चे की एक दिन की कक्षा या फिर उसका सामाजिक-सांस्कृतिक विकास? दोनों

में अधिक महत्त्वपूर्ण क्या? और भी ऐसे कई मुद्दे। ख़ैर! इस घटना के बाद मैंने यह ठान लिया कि अब मैं उन्हें उनकी भाषा में बोलने की पूरी आज़ादी दूँगा।

सभी चित्र : द्रोण साहू

द्रोण साहू शासकीय प्राथमिक शाला बिजेमाल, महासमुंद, छत्तीसगढ़ में 15 वर्षों से पढ़ा रहे हैं। वे हिन्दी, अँग्रेज़ी और शिक्षा में स्नातकोत्तर हैं। इनकी कक्षाओं में दो भाषा समुदाय से बच्चे आते हैं, जिनके साथ वे काम करना पसन्द करते हैं। शौक़िया शिक्षा पर कविताएँ भी लिखते हैं।

सम्पर्क : drdron2005@gmail.com